

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

विश्रिता वरुणमभिः RV. 1, 33, 2. राक्षसा दिव्यमाहून्महत्तः पयणवात् AV. 13, 1, 26. 12, 1, 8. VS. 13, 53. 22, 25. häufig vom Luftmeer: व्योद्रेणा पतय ते-  
षमर्णवम् RV. 1, 168, 6. या सतवर्धनर्णवं त्रिक्लवारमर्णवतः 8, 40, 5. 10, 10, 1. 63, 3. (सूर्य) सुपुनमाणुं पतयत्समर्णवः AV. 13, 2, 2, 1. 3, 6, 3. 5, 6, 4. 11, 8, 2, 6. In der Bedeutung Meer sehr häufig in der spätern Sprache. AK. 1, 2, 3, 1. 3, 4, 60. H. 1073. अथ यदरण्यायनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तदरश्च कृ वै एयश्चाणवौ (spiel. Etym.) ब्रह्मलोके u. s. w. Khāṇḍ. Up. 8, 5, 3. ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्त्यर्णवे Ait. Up. 2, 1. विशीर्यतो नावमिवा-  
र्णवात्ते DRAUP. 7, 19. Hit. I, 198. RAGH. 1, 16. 3, 59. VID. 227. महार्णवः R. 4, 9, 38. यथादधीना च चोरा महार्णवः 11, 11. लवणार्णव 1, 1, 70. चतुरर्ण-  
वोपमाः RAGH. 3, 30. सपर्वतवनार्णवा (पृथिवी) R. 1, 16, 32. Bildlich: जना-  
र्णव N. 13, 16. चितार्णव R. 3, 4, 22. Vgl. जलार्णव Regenzeit. — c) N. eines  
Metrum's COLEBR. Misc. Ess. II, 130, N. 4. 164. Vgl. अर्ण 2, d. — d) Titel  
eines jur. Werkes: अयराक्षार्णवपरिज्ञातान् Verz. d. B. H. No. 1170. —  
Kāc. und Siddh. K. zu P. 5, 2, 109 leiten das Wort von अर्णम् ab.

अर्णवज (अ० + ज) m. n. os Sepiae RATNAM. im ÇKDr.

अर्णवमन्दिर (अ० + म०) m. ein Bein. Varuṇa's H. 188.

अर्णवाद्व (अ० + उद्व) m. N. einer Pflanze (अग्निजार) RĪGĀN. im ÇKDr.

अर्णम् n. 1) Woge, Fluth, Strom: उज्ज्वलर्णोसि RV. 1, 32, 2. अर्णो न दे-  
वो धृयता परि षुः 167, 9. अर्णो अयो प्रैरयदक्षिणां समुद्रम् 2, 19, 3. अ-  
र्णोमिर्मा मधुमाद्रिः 4, 3, 12. सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा 9, 107, 12. 1, 61, 12.  
174, 4. 4, 16, 7. 19, 6. 6, 72, 3. 7, 18, 5. 87, 1. 10, 8, 3. — 2) die See, Meer-  
fluth RV. 1, 117, 14. वि मध्ये अर्णोतो धाविं पञ्चः 158, 3. 6, 62, 6. 7, 69, 8.  
8, 20, 13. परि स्रव नो अर्णश्च चमूषे 9, 97, 21. vom Luftmeer: रथो यदो  
पर्यर्णोसि दीपत् 1, 180, 1. या सूर्या अरुहकुक्रमणो ऽयुक्त यद्वरितः 5, 43,  
10. अयं विद्वच्चित्रदशैकमर्णः 6, 47, 5. 7, 60, 4. 10, 49, 9. Zweifelhaft bleibt  
die Bedeutung in der verunstalteten Stelle 1, 122, 14: क्षिरण्यकर्ण मणि-  
ग्रोवमर्णस्तत्रो विश्वे वरिवस्यतु देवाः, Padap.: मणिग्रोवम् । अर्णः । Nach  
NAIGH. 1, 13 bedeutet अर्णम् Fluss, nach 1, 12. Up. 4, 198. AK. 1, 2, 3, 4.  
H. 1069: Wasser. — Diese Form des Wortes ist dem RV. eigen und  
wird im AV. und in der VS. durch अर्णव ersetzt. Etymologie wie bei  
अर्ण.

अर्णसँ adj. von अर्ण gaṇa तृणादि.

अर्णसाति (अ० + सा०) f. Kampfgewühl: त्रै कृ त्यदिन्द्रार्णसातो स्वमीळहे  
नरं आना क्वते RV. 1, 63, 6. तस्मै तवस्यमनु दापि सत्रेन्द्राय द्वेभिरर्ण-  
सातो 2, 20, 8. आश्रुषाणासो मिथो अर्णसाति 4, 24, 4.

अर्णस्वत् (von अर्णम्) adj. fluthenreich Nir. 10, 9.

अर्णोद (अर्णम् + द) m. 1) Wolke. — 2) N. einer Pflanze, Cyperus ro-  
tundus (मुस्ताक), RĪGĀN. im ÇKDr.

अर्णोभव (अर्णम् + भव) m. Muschel RĪGĀN. im ÇKDr.

अर्णोवत् (अर्णम् + वत् von वर) adj. die Fluthen einschliessend: अ-  
हिम् RV. 2, 19, 2.

अर्त् (स्तृ) eine Sautra-Wurzel. आनर्त्, अर्तिष्यति, अर्तति Siddh.  
K. 131, a, 14. अर्तिवा oder अर्तिवा P. 1, 2, 24, Sch. praes. अर्तीयते (von  
अर्तीय, denom. von अर्ति), ein Stamm, der durch alle Verbalformen durch-  
geht: अर्तीयता u. s. w. P. 3, 1, 29, 31. tadeln, schelten; Mitleid haben;  
vertheuern; gebieten; gehen Dhātup. 24, 1, N. Siddh. K. P. 1, 2, 24, Sch.

अर्तगल m. = अर्तगल BHARATA zu AK. 2, 4, 2, 55 im ÇKDr.

अर्तन (von अर्त्) 1) adj. schmähdend VS. 30, 19. MAHABH. = दुःविन्-  
2) n. Tadel AK. 3, 3, 32.

अर्त्य s. अन्वर्तितर.

अर्ति f. 1) Schmerz AK. 3, 4, 11, 70. 32, 18. H. 1371. an. 2, 158. MED. I.

3. Suçr. 2, 461, 18. शिरोऽर्ति KATHA. 13, 152. — 2) das Ende eines Bo-  
gens AK. 3, 4, 9, 40. H. 775. an. 2, 158. MED. — In der ersten Bedeu-  
tung eine Schwächung von अर्ति.

अर्तिका f. eine ältere Schwester (im Drama) Svāmin zu AK. 1, 1, 3, 15  
im ÇKDr. — Vgl. अर्तिका und अर्तिका.

अर्तुक (von अर्त्) adj. herausfordernd, streitlustig: समैकानान्विन्दत्यर्तु-  
का कृ भवति ÇAT. Br. 4, 6, 8, 12.

अर्थ s. अर्थय.

अर्थ Up. 2, 4. Im RV. nur an wenigen Stellen des 10ten Maṇḍala  
m., sonst n.; in der spätern Zeit nur m. (vgl. jedoch M. 11, 189. R. 5,  
63, 15) Siddh. K. 230, b, 6. 1) Ziel, Zweck AK. 3, 4, 88. H. 1514. an. 2,  
211. MED. th. 2. तदिन्द्रो अर्थं चेतति RV. 1, 10, 2. त्वामच्छा चरामसि तदि-  
दर्थं दिवे दिवे 9, 1, 5. मेघो नु गादपरो अर्थमेतम् 10, 18, 4. इयुर्यं न न्यर्थं  
परुलोम 7, 18, 9. एतेनासो न डेवसनासो अर्थम् 4, 6, 10. 10, 29, 5. VS. 18,  
15. अर्थद्वयविरोधे ऽर्थसामान्यम् KĀTJ. Çr. 1, 4, 16. 5, 5. अत्यर्थक्रमेणः 3.  
अर्थनिर्वृतेः 2. 3, 27. अर्थाभाव 22, 6, 6. अर्थलोप 4, 3, 22. अर्थप्रसङ्गा 1, 10, 3.  
एकार्थ, पुरुषार्थ 7, 2. परार्थ 4, 3, 23. एष्वर्थेषु पशून्किंस्तु M. 5, 42. अर्थ-  
संपादन 7, 168. यदर्थमिष्यते भार्या प्राप्तः सो ऽर्थस्त्वया मयि BRĀHMAN. 2, 7.  
स्ते कुटुम्बार्थात् ausser wenn es für die Familie geschieht Jāṇ. 2, 46. य-  
वार्थास्तु तिलैः कार्यः was man mit der Gerste bezweckt, soll man mit  
Tila thun, d. h. statt der Gerste Tila nehmen 1, 233. Sehr häufig am  
Ende eines adj. comp. (f. आ) P. 2, 1, 36 und Vārt. 3. 4. AK. 3, 6, 43.  
Accent P. 6, 2, 41. यज्ञार्थात्कर्मणो ऽन्यत्र mit Ausnahme eines Werkes,  
das ein Opfer zum Ziel hat, zu einem Opfer dient BHAG. 3, 9. पित्रर्थे (für  
die Manen bestimmt) पाञ्चयज्ञिके M. 3, 83. योगविभाग उत्तरार्थः findet des  
Folgenden wegen statt P. 1, 4, 60, Sch. 1, 23. Vārt. 2. 62, Sch. 2, 6, Sch.  
संतानार्थाय विद्ये RAGH. 1, 34, 2. 16. AK. 2, 8, 2, 19. H. 752. — अर्थम् acc.,  
अर्थाय dat. und अर्थे loc. zum Behuf von, wegen, für. Am häufigsten  
(im MANU gegen 70 Mal) erscheint अर्थम् und, wie es scheint, stets am Ende  
eines comp.: यज्ञसिद्धयर्थम् M. 1, 23. विद्यातपोविवृद्धयर्थं शरीरस्य च शुद्ध्यै  
6, 30. उदकग्रहणार्थम् PĀNĀT. 19, 15. जिकीर्षुर्मो गुर्वर्थम् DAÇ. 1, 36. अम-  
रान्वै निबोधास्मान्दम्पत्यर्थमागतान् N. 3, 3. वेतोपलक्षणादर्थमादिष्टो ऽस्मि  
काश्यपेन ÇIK. 46, 6. आपदर्थं धने रतेद्वारावनेद्वैरपि M. 7, 213. चिह्नभूतो  
विभूत्यर्थमयं धात्रा विनिर्मितः N. 17, 6. किमर्थम् weshalb HIp. 4, 28. R. 1,  
8, 2. तदर्थम् 73, 4. एतदर्थम् N. 3, 25. अमुत्रार्थम् M. 7, 95. तद्दर्शनादभूच्छो-  
भ्यान्दर्शार्थमादरः qua conspecta Civae desiderium uxorem ducendi au-  
gebatur KUMĀRAS. 6, 13. Im comp. ohne Flexionszeichen: एककार्यार्थसंग-  
तो SUND. 1, 4. — अर्थाय steht sowohl mit dem gen. als auch am Ende  
eines comp.: प्रत्याख्याता मया तत्र नलस्यार्थाय देवताः N. 13, 19. स्तुप-  
र्णस्य चार्थाय भोक्तृनीयमनेकशः प्रेषितं तत्र राज्ञा 23, 9. मनायं नूनमर्थाय य-  
तमानो विहङ्गमः । राजसेन कृतः संख्ये प्राणोस्त्यजति R. 3, 73, 2. 2, 81, 1.  
5, 13, 71. BRĀHMAN. 1, 29. अस्माकार्थाय (um unserntwillen) जज्ञिषे AV. 1,  
7, 6. कामसंजननार्थाय R. 1, 9, 19. 4, 4. 2, 52, 88, Viçv. 12, 9. SUND. 1, 7, 24.